



॥ श्री वरुण देव पूजा विधि ॥
॥ ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री वरुण देव पूजा विधि ॥

भगवान वरुण देव जल, समुद्र, नदियों, वर्षा, सत्य और धर्म के अधिष्ठाता देव माने जाते हैं। उनकी पूजा करने से जीवन में शांति, समृद्धि, स्वास्थ्य, जल तत्व का संतुलन तथा मानसिक स्थिरता की कामना की जाती है।

पूजा का शुभ समय

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त या सूर्योदय के बाद।
सोमवार, शुक्रवार या पूर्णिमा के दिन पूजा करना शुभ माना जाता है।
वर्षा ऋतु, ज्येष्ठ मास तथा किसी भी शुभ कार्य से पहले भी वरुण देव की आराधना की जा सकती है।

पूजा सामग्री

स्वच्छ जल से भरा तांबे या मिट्टी का कलश
आम या अशोक के पत्ते (यदि उपलब्ध हों)
नारियल (वैकल्पिक)
चंदन
अक्षत (साबुत चावल)
सफेद या नीले पुष्प
धूप और दीप
नैवेद्य (फल, मिश्री, दूध या खीर)
पंचामृत (वैकल्पिक)
आसन
आरती की थाली

पूजा विधि

1. शुद्धि

प्रातः स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा स्थान को साफ करें और पूर्व या पश्चिम दिशा की ओर मुख करके आसन ग्रहण करें।

2. संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर अपनी मनोकामना का संकल्प करें।

संकल्प मंत्र

मम सर्वमङ्गलप्राप्त्यर्थ, आरोग्य-समृद्धि-सुख-शान्ति-सिद्ध्यर्थ,
श्रीवरुणदेवपूजनं करिष्ये।

3. ध्यान

आँखें बंद करके भगवान वरुण का ध्यान करें।

ध्यान मंत्र

शान्ताकारं जलाधीशं मकरासनसंस्थितम्।
पाशहस्तं महातेजं वरुणं प्रणमाम्यहम्॥

4. आवाहन

हाथ जोड़कर भगवान वरुण का आवाहन करें।

ॐ वरुण देवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

5. पूजन

क्रमशः चंदन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पित करें।

6. मंत्र जप

मूल मंत्र

ॐ वरुणाय नमः॥ या ॐ अपां पतये वरुणाय नमः॥
इन मंत्रों का 11, 21 या 108 बार जप करें।

7. प्रार्थना

हे वरुण देव! आप समस्त जल के स्वामी और सत्य के रक्षक हैं। मेरे जीवन से रोग, भय, दुःख, कलह और सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करें। मुझे उत्तम स्वास्थ्य, सद्बुद्धि, सुख, समृद्धि और शुद्ध विचार प्रदान करें। आपके आशीर्वाद से मेरे परिवार में शांति और मंगल बना रहे।

8. आरती

वरुण देव की आरती श्रद्धापूर्वक करें।

9. क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

10. प्रसाद वितरण

पूजा पूर्ण होने पर प्रसाद सभी परिवारजनों में वितरित करें और कलश के जल को तुलसी, किसी पौधे या स्वच्छ जल स्रोत में श्रद्धापूर्वक अर्पित करें।

पूजा के लाभ

मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा की प्राप्ति।
जल तत्व से जुड़े दोषों की शांति की प्रार्थना।
वर्षा, कृषि और समृद्धि की कामना।
परिवार में सुख, शांति और मंगल की भावना।
सत्य, संयम और धर्म के पालन की प्रेरणा।